कोरोनाकाल की कैद में सौरभ दम्पति ने रची तीन पुस्तकें

(डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है, एक दोहाकार के रूप में जहां उनकी दोहा सतसई 'तितली है का खामोश' के अलावा हजारों दोहे प्रकाशित हो चुके हैं, वह दैनिक स्तंभकार के रूप में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों संपादकीय पृष्ठों पर पर प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे हैं।) कोरोनाकाल की कैद ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्तंभ लेखन के लिए प्रेरित किया, जिसमें उनकी पत्नी प्रियंका तथा परिजनों का बहुमुखी योगदान रहा। दोहा संग्रह तितली है खामोश , व्यंग्य आंख्या की माखी राम उड़वै और निबंध नए पंख डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ की कोरोना काल में रची नयी कृतियाँ है जिनके अंश आये दिन देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं. माता कौशल्या तथा पिता रामकुमार के आदर्शों से प्रेरित होकर रचनात्मक लेखन में पदार्पित हुए डॉ.सौरभ मानते कि भले ही वे कविताएं आदि लिखते रहे हैं, किंतु साहित्य में दोहा ही उनकी प्रिय विधा रही है। आलेख, निबंध तथा फीचर लेखन उनकी अभिव्यक्ति के अन्य प्रमुख रूप हैं

करीब डेढ़ दशक पहले हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी ने विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के दो वर्गों में काव्य पाठ तथा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता के प्रदेशभर से चयनित प्रतिनिधियों के फाइनल मुकाबले में राज्य कवि उदयभानु 'हंस' के हाथों आशीर्वाद स्वरुप सांत्वना पुरस्कार से अलंकृत एक छात्र आज भारत के प्रमुख अखबारों में नियमित लेखन से समाज को एक सृजनात्मक दृष्टिकोण देने के लिए तत्पर है। डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है, एक दोहाकार के रूप में जहां उनकी दोहा सतसई 'तितली है का खामोश' के अलावा हजारों दोहे प्रकाशित हो चुके हैं, वह दैनिक स्तंभकार के रूप में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों संपादकीय पृष्ठों पर पर प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे हैं। लेखन की रूचि-अभिरुचि से जुड़ी अर्धांगिनी प्रियंका के जीवन में आने के बाद उनकी लेखकीय साधना व प्रतिभा निरंतर नई धार मिली है।

आजकल इस सौरभ दिव्य-दंपति की लेखनी का समसामयिकी पर दैनिक लेखन नई पीढ़ी के लिए प्रेरणापुंज है। प्रमुख राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के अलावा इनके स्तंभ अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं में करीब चार हजार वेबपोर्टल न्यूज़पेपर्स में प्रतिदिन देश और दुनिया में प्रकाशित हो रहे हैं। इससे दोनों की चिंतनशीलता, लेखकीय दक्षता तथा नियमितता के प्रति समर्पण व साधना का ही प्रतिफल कहा जाएगा कि सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं पर केंद्रित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बहुआयामी लेखन मौलिक सूझबूझ के साथ हो रहा है। हरियाणा प्रदेश के लिए भी यह गर्व का विषय है कि एक गांव से प्रदेश, देश व दुनिया को चिंतक व विचारक की दृष्टि से देखा जा रहा है। जहां डॉक्टर सत्यवान एक रिसर्च ऑथर हैं, वहीं परास्नातक कर चुकी मेधावी प्रियंका आजकल शोध की तैयारी में हैं। एक ओर जहां यह जोड़ी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी एवं अध्यापन में जुटी है, वहीं वे दोनों अपने नवाचारी प्रकल्प आरके फीचर्स के माध्यम से स्तंभ लेखन में निरंतर नए आयाम रचते जा रहे हैं। एक सवाल के जवाब में डॉ. सौरभ बताते हैं कि लिखते तो वे बचपन से ही रहे हैं, किंतु कोरोना काल की कैद ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्तंभ लेखन के लिए प्रेरित किया, जिसमें प्रियंका तथा परिजनों का बहुमुखी योगदान रहा। माता कौशल्या तथा पिता रामकुमार के आदर्शों से प्रेरित होकर रचनात्मक लेखन में पदार्पित हुए डॉ.सौरभ मानते कि भले ही वे कविताएं आदि लिखते रहे हैं, किंतु साहित्य में दोहा ही उनकी प्रिय विधा रही है। आलेख, निबंध तथा फीचर लेखन उनकी अभिव्यक्ति के अन्य प्रमुख रूप हैं।

साहित्य एवं स्तंभ लेखन के लिए हरियाणा से आईपीएस मनुमुक्त मानव पुरस्कार,उत्तर प्रदेश की राष्ट्रभाषा रत्न पुरस्कार, साहित्य साधक सम्मान के अलावा हिसार के प्रेरणा पुरस्कार, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की भिवानी शाखा तथा आईपीएस मानव मुक्त मानव पुरस्कार से अलंकृत डॉ सौरभ कम उम्र में परिपक्व लेखन से विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। आकाशवाणी दूरदर्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक चैनल्स पर पैनलिस्ट के तौर पर भी उनकी सक्रियता प्रेरक रही है। युवाओं के नाम अपने संदेश में वे कहते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष मूल्यांकन करते हुए रचनात्मकता से क्षेत्र विशेष में कार्य करें आपको सफलता अवश्य

Scanned with CamScanner

दैनिक स्तंभ लेखन को समर्पित दिव्य दंपति जोड़ी

"सत्यवीर नाहड़िया की कलम से"

करीब डेढ़ दशक पहले हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड,भिवानी ने विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के दो वर्गों में काव्य पाठ तथा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता के प्रदेशभर से चयनित प्रतिनिधियों को फाइनल मुकाबले के लिए बोर्ड में आमंत्रित किया था, जहां राज्य कवि उदयभानु हंस सहित वरिष्ठ रचनाकारों को निर्णायक मंडल में शामिल किया गया था। संयोगवश शिक्षक वर्ग के उक्त दोनों प्रतियोगिताओं में मुझे राज्यभर में प्रथम घोषित किया गया। कार्यक्रम के बाद जलपान के समय छात्र वर्ग के सांत्वना पुरस्कार से अलंकृत एक छात्र ने अपनी कॉपी मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा कि सर अपना पूरा पता लिख दो,मैं आपके लेख व रचनाएं दैनिक ट्रिब्यून सहित कई पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ता रहता हूं।एक सप्ताह बाद ही उस छात्र का पत्र मुझे प्राप्त हुआ कि उनका पहला काव्य संग्रह यादें प्रेम में जाने वाला है, कृपया शुभाशीष व संदेश का एक पृष्ठ लिख दें।

भिवानी के उनके काव्य पाठ की भूमिका में रखकर मैंने शुभकामनाएँ प्रेषित कर दीं। कुछ दिनों बाद संबंधित काव्य संग्रह प्रकाशित होकर पहुंचा, उनके किशोर मन के भाव कविता के रूप में पाकर अभिभूत हो गया,उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु पचास प्रतियाँ भी खरीदीं तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इस बालकवि के हौसलों को रेखांकित भी किया। आज उसी बच्चे को जब एक सफल रचनाकार तथा स्तंभकार के रूप में देखता हूं तो अत्यंत खुशी होती है। डॉ सत्यवान वर्मा सौरभ आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है, एक दोहाकार के रूप में जहां उनकी दोहा सतसई तितली है का खामोश के अलावा हजारों दोहे प्रकाशित हो चुके हैं, वहीं दैनिक स्तंभकार के रूप में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों संपादकीय पृष्ठों पर पर प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे हैं। लेखन की रुचि-अभिरुचि से जुड़ी अर्धांगिनी प्रियंका के जीवन में आने के बाद उनकी लेखकीय साधना व प्रतिभा निरंतर नई धार मिली है। आजकल इस सौरभ दिव्य-दंपति की लेखनी का समसामयिकी पर दैनिक लेखन नई पीढ़ी के लिए प्रेरणापुंज है। प्रमुख राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के अलावा इनके स्तंभ अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं में करीब चार हजार वेबपोर्टल न्यूजपेपर्स में प्रतिदिन देश और दुनिया में प्रकाशित हो रहे हैं। इसमें दोनों की चिंतनशीलता, लेखकीय दक्षता तथा नियमितता के प्रति समर्पण व साधना का ही प्रतिफल कहा जाएगा कि सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं पर केंद्रित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बहुआयामी लेखन मौलिक सूझबूझ के साथ हो रहा है। हरियाणा प्रदेश के लिए भी यह गर्व का विषय है कि एक गांव से प्रदेश, देश व दुनिया को चिंतक व विचारक की दृष्टि से देखा जा रहा है।

जहां डॉ प्रदेश सरकार के पशुपालन विभाग में वेटरनरी इंस्पेक्टर के तौर पर सेवारत हैं, वहीं भौतिकी एमएससी कर चुकी मेधावी प्रियंका आजकल दिल्ली विश्वविद्यालय की शोधार्थी हैं। एक ओर जहां यह जोड़ी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी में जुटी है, वहीं वे दोनों अपने नवाचारी प्रकल्प आरके फीचर्स के माध्यम से स्तंभ लेखन में निरंतर नए आयाम रचते जा रहे हैं।

एक सवाल के जवाब में डॉ. सौरभ बताते हैं कि लिखते तो वे बचपन से ही रहे हैं,किंतु कोरोनाकाल की कैद ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्तंभ लेखन के लिए प्रेरित किया, जिसमें प्रियंका तथा परिजनों का बहुमुखी योगदान रहा। माता कौशल्या तथा पिता रामकुमार के आदर्शों से प्रेरित होकर रचनात्मक लेखन में पदार्पित हुए डॉ.सौरभ मानते कि भले ही वे कविताएं आदि लिखते रहे हैं,किंतु साहित्य में दोहा ही उनकी प्रिय विधा रही है। आलेख, निबंध तथा फीचर लेखन उनकी अभिव्यक्ति के अन्य प्रमुख रूप हैं।

साहित्य एवं स्तंभ लेखन के लिए उत्तर प्रदेश की राष्ट्रभाषा रत्न पुरस्कार, साहित्य साधक सम्मान के अलावा हिसार के प्रेरणा पुरस्कार, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की भिवानी शाखा तथा आईपीएस मानव मुक्त मानव पुरस्कार से अलंकृत डॉ सौरभ कम उम्र में परिपक्व लेखन से विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। आकाशवाणी दूरदर्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक चैनल्स पर पैनलिस्ट के तौर पर भी उनकी मौलिकता प्रेरक रही है। युवाओं के नाम अपने संदेश में वे कहते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष मूल्यांकन करते हुए रचनात्मकता से क्षेत्र विशेष में कार्य करें आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

Scanned with CamScanner

इंटरनैशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यू में छपा सत्यवान सौरभ का विवरण

सिवानी मंडी, 9 अप्रैल (पोपली): बड़वा के युवा दोहाकार एवं पेशे से वेटर्नरी इंस्पैक्टर सत्यवान सौरभ द्वारा गांव बड़वा की सांस्कृतिक धरोहर एवं विरासत पर लिखे गए आलेखों के विवरण इंटरनैशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यू की 2020 के वॉल्यूम 7 भाग एक में स्थान दिया गया है। विदित रहे कि सत्यवान सौरभ पिछले 20 सालों से हरियाणवी फीचर्स लिख रहे हैं। इनके सैंकड़ों आलेख राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके है। इनकी 2 पुस्तकें भी आ चुकी है। मगर ये पहला मौका है जब इनके आलेखों पर महर्षि दयानंद विश्विद्यालय की

सत्यवान सौरभ।

शोधार्थी कुसुम सैनी ने प्रोफैसर डा. सुषमा सिंह के सान्निध्य में विसुअल आर्ट्स के तहत पीएच.डी. की उपाधि हासिल की है। सत्यवान सौरभ के इस योगदान के लिए हरियाणा की कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के धरोहर संग्रहालय के प्रोफैसर डा. महासिंह पूनिया,रमेश पूर्व चेयरमैन, डा.रामफल चहल, लाल सिंह लालू, मास्टर छोटूराम, मनोज हरियाणवी, नाहर सिंह तंवर, डा. मोनिका वर्मा, सुनील कुमार, डा. मनोज कुमारी, परविंदर तंवर, संजय स्वामी, सुनील अधिवक्ता, राजेंद्र पूर्वा, अरविन्द पायलट, विक्रम तंवर, महेन्दर लखेरा सहित कई लोगों ने बधाई दी है।

Scanned with CamScanner

सत्यवान एवं प्रियंका 'सौरभ' को मिली डॉक्टरेट की मानद उपाधि

चेतना संवाददाता।

सिवानी मंडी।

इंटरनेशनल ब्रिटिश अकादमी और इंटरनेशनल फोरम ऑफ पीस अकादमी तथा वर्ल्ड पीस फेडरेशन, बांग्लादेश एवं फिलीपींस द्वारा दिनांक 19 मार्च, 2022 को यूनिवर्सिटी एंड म्यूजियम ऑफ़ द रिसर्च एंड विजडम, ढाका द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वर्चुअल प्रोग्राम में गाँव बड़वा, सिवानी (भिवानी) के युवा लेखक दम्पति सत्यवान 'सौरभ'एवं प्रियंका 'सौरभ'को उनकी शैक्षणिक,साहित्यिक,सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यों मे अतुलनीय अनवरत योगदान के लिए डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। सौरभ दम्पति, ब्रिटेन, बांग्लादेश व फीलिपिन्स देश द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित होने वाले हरियाणा के प्रथम

(सौरभ दम्पति, ब्रिटेन, बांग्लादेश व फीलिपिन्स देश द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित होने वाले हरियाणा के प्रथम व्यक्ति और दम्पति हैं)

सहित सम्पूर्ण भारत के लिए विशेष सम्मान की बात है.

गौरतलब है कि सत्यवान 'सौरभ' और प्रियंका 'सौरभ' को साहित्यकार और शिक्षक के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है. दोनों कवि, लेखक, शिक्षक हैं. हाल ही में इनकी छह किताबें आई है. सत्यवान 'सौरभ' के दोहा संग्रह तितली

अकादमी से अनुदान भी मिला है. वही इनकी पुस्तकों कुदरत की पीर और इश्यूज एंड पेनस में इन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर जबरदस्त प्रहार किये हैं. प्रियंका 'सौरभ' की तीनों पुस्तकें निर्भयाएं, फीयरलेस और दीमक लगे गुलाब महिला सशक्तिकरण का उदाहरण पेश करती है.इस अवसर पर सौरभ दम्पति ने कहा कि विश्व साहित्य,

शिक्षाशास्त्र पर ऑनलाइन परीक्षण समाप्त करने के बाद विश्व शांति मंच जेनेवा और यूनेस्को की अंतर्राष्ट्रीय ब्रिटिश अकादमी से इतनी उच्च मानद उपाधि प्राप्त करने पर हमें अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

देश-विदेश के हजारों पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न भाषाओं में दोनों के सम्पादकीय लेखों ने अलग पहचान बनाई है. दोनों की इन उपलब्धियों पर पूर्व चेयरमैन रमेश सिंहमार, पूर्व तहसीलदार प्रताप सिंह भाटीवाल, भाजपा मंडल अध्यक्ष लाल सिंह लालू, संदीप भाटीवाल, डॉ प्रताप सिंहमार, अधिवक्ता सुनील सिंहमार, डॉ दलबीर सिंह भाटीवाल, महेन्दर सिंह लखेरा, डॉ नोकरम, मनोज हरियाणवी, मास्टर परविंदर तंवर, विक्रम तंवर, ज्ञानीराम शर्मा, राजकुमार चौधरीवास, मास्टर अजय शर्मा, मास्टर भूपेंदर गुरेरा, दीपक दीप, मुकेश, विनोद शर्मा समेत सभी

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र लेखन से सत्यवान 'सौरभ' का देश में सम्मान

14 की उम्र में शुरू किया लेखन, कई रचनाओं का प्रादेशिक भाषा में अनुवाद

• सिवानी मंडी (भिवानी) राष्ट्रीय जंक्शन/

जिले के युवा साहित्यकारों में सत्यवान 'सौरभ' का नाम खास है। किसान परिवार और अभाव में पले-बढ़े सत्यवान 'सौरभ' वर्तमान विषयों पर या किसी भी घटना या तथ्य पर लघु कथा, कहानी, कविता लिखने की महारत रखते हैं। आर्थिक तंगी में भी संघर्षों को पीठ न दिखाने वाले सत्यवान 'सौरभ' की कई पुस्तकें भी छप चुकी हैं। कई बड़े-बड़े सम्मानों से भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

खंड के सबसे बड़े गाँव बड़वा के रहने वाले सत्यवान 'सौरभ' हरियाणा पशुपालन विभाग में वेटरनरी इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। परन्तु ये राजनितिक विज्ञान में प्रथम श्रेणी से मास्टर है और साथ-साथ रिसर्च के छात्र भी है।

14 वर्ष की उम्र से लेखन में सक्रिय सत्यवान 'सौरभ' के पिता किसान एवं माता कौशल्या देवी गृहणी हैं। 31 वर्षीय सत्यवान 'सौरभ' आज लेखन के क्षेत्र में सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों पर एक जाना-पहचाना नाम हैं। निर्धनता और अभाव में ट्यूशन पढ़ाकर निजी विद्यालयों में किसी तरह शिक्षण कार्य करके पहले पशुपालन में डिप्लोमा और फिर स्नातक की परीक्षा गणित एवं राजनितिक विषय से पास की। परिवार में पत्नी प्रियंका 'सौरभ' के साथ वे नौकरी एवं शिक्षण के साथ स्वतंत्र लेखन का कार्य करते रहते हैं।

हजारों दैनिक, मासिक, पाक्षिक अखबारों में जहां उनके सम्पादकीय लेख छपते रहते हैं वहीं उनकी कविताएं एवं दोहे देश की अनेक नामी पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुके हैं। यूट्यूब चैनलों और इंटरनेट मीडिया में उनके लिखे दोहों की व्यापक चर्चा है। दोहों पर हरियाणा साहित्य अकादमी से स्वीकृत उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'तितली है खमोश' आ चुकी है, जो ऐमजॉन और फ्लिपकार्ट पर काफी पॉपुलर है।

मंचों से रचनापाठ व आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से सौरभ रचनापाठ करते हैं जबकि कुछ रचनाओं का उड़िया अंग्रेजी, पंजाबी,नेपाली,मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है।

ये हैं प्रकाशित पुस्तकें

सत्यवान 'सौरभ' की प्रकाशित पुस्तकों में यादें (काव्य संग्रह) जो इन्होने मात्र सौलह वर्ष की उम्र में कक्षा ग्यारह में पढ़ते हुए लिखा और प्रकाशित करवाया, कुदरत की पीर (निबंध संग्रह) इश्यूज एंड पैन्स (अंग्रेजी निबंध सग्रह) और तितली है खामोश (दोहा संग्रह) के साथ-साथ अनेक सांझे संकलनों में उनकी रचनाएँ छपी है, इंटरनेट पर अनेक साहित्यिक कोशों में इनकी रचनायें शामिल हैं। वैसे तो सत्यवान 'सौरभ' को अब तक मिले सम्मानों की फेहरिस्त काफी लंबी है, लेकिन इनमें प्रमुख रूप से अंतरराष्ट्रीय भाषा सम्मान, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भिवानी द्वारा युवा साहित्यकार सम्मान, आईपीएस मनुमुक्त मानव श्रेष्ठ युवा लेखिनी सम्मान प्रमुख हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड सहित कई प्रसिद्ध संस्थाओं द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र लेखन से सत्यवान 'सौरभ' का देश में सम्मान

14 की उम्र में शुरू किया लेखन, कई रचनाओं का प्रादेशिक भाषा में अनुवाद

सिवानी मंडी (भिवानी) जिले के युवा साहित्यकारों में सत्यवान सौरभ का नाम खास है। किसान परिवार और अभाव में पले–बढ़े सत्यवान श्सौरभश वर्तमान विषयों पर या किसी भी घटना या तथ्य पर लघु कथा, कहानी, कविता लिखने की महारत रखते हैं। आर्थिक तंगी में भी संघर्षों को पीठ न दिखाने वाले सत्यवान 'सौरभ' की कई पुस्तकें भी छप चुकी हैं। कई बड़े–बड़े सम्मानों से भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

खंड के सबसे बड़े गाँव बड़वा के रहने वाले सत्यवान श्सौरभश हरियाणा पशुपालन विभाग में वेटरनरी इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत है। परन्तु ये राजनितिक विज्ञान में प्रथम श्रेणी से मास्टर है और साथ–साथ रिसर्च के छात्र भी है।

14 वर्ष की उम्र से लेखन में सक्रिय सत्यवान श्सौरभश के पिता किसान एवं माता कौशल्या देवी गृहणी हैं। 31 वर्षीय सत्यवान श्सौरभश आज लेखन के क्षेत्र में सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों पर एक जाना–पहचाना नाम हैं। निर्धनता और अभाव में ट्यूशन पढ़ाकर निजी विद्यालयों में किसी तरह शिक्षण कार्य करके पहले पशुपालन में डिप्लोमा और फिर स्नातक की परीक्षा गणित एवं राजनितिक विषय से पास की। परिवार में पत्नी प्रियंका श्सौरभश के साथ वे नौकरी एवं शिक्षण के साथ स्वतंत्र लेखन का कार्य करते रहते हैं।

हजारों दैनिक, मासिक, पाक्षिक अखबारों में जहां उनके सम्पादकीय लेख छपते रहते हैं वहीं उनकी कविताएं एवं दोहे देश की अनेक नामी पत्र–पत्रिकाओं में भी छप चुके हैं। यूट्यूब चैनलों और इंटरनेट मीडिया में उनके लिखे दोहों की व्यापक चर्चा है। दोहों पर हरियाणा साहित्य अकादमी से स्वीकृत उनकी प्रसिद्ध पुस्तक श्तितली है खमोशश आ चुकी है, जो ऐमजॉन और फ्लिपकार्ट पर काफी पॉपुलर है।

मंचों से रचनापाठ व आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से सौरभ रचनापाठ करते है जबकि कुछ रचनाओं का उड़िया अंग्रेजी, पंजाबी,नेपाली,मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है।

सत्यवान सौरभ की ये हैं प्रकाशित पुस्तकें

सत्यवान सौरभ की प्रकाशित पुस्तकों में यादें (काव्य संग्रह) जो इन्होने मात्र सौलह वर्ष की उम्र में कक्षा ग्यारह में पढ़ते हुए लिखा और प्रकाशित करवाया, कुदरत की पीर (निबंध संग्रह) इश्यूज एंड पैन्स (अंग्रेजी निबंध संग्रह) और तितली है खामोश (दोहा संग्रह) के साथ–साथ अनेक सांझे संकलनों में उनकी रचनाएँ छपी है, इंटरनेट पर अनेक साहित्यिक कोशों में इनकी रचनायें शामिल हैं। वैसे तो सत्यवान श्सौरभश को अब तक मिले सम्मानो की फेहरिस्त काफी लंबी है, लेकिन इनमें प्रमुख रूप से अंतरराष्ट्रीय भाषा सम्मान, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भिवानी द्वारा युवा साहित्यकार सम्मान, आईवपीवएसव मनुमुक्त मानव श्रेष्ठ युवा लेखिनी सम्मान प्रमुख हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड सहित कई प्रसिद्ध संस्थाओं द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

Scanned with CamScanner

कोरोनाकाल की कैद में सौरभ दम्पति ने रची तीन पुस्तकें

रविवार दिल्ली नेटवर्क

कोरोनाकाल की कैद ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्तंभ लेखन के लिए प्रेरित किया, जिसमें उनकी पत्नी प्रियंका तथा परिजनों का बहुमुखी योगदान रहा। दोहा संग्रह तितली है खामोश , व्यंग्य आंच्या की माखी राम उड़ावे और निबंध नए पंख डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ की कोरोना काल में रची नयी कृतियाँ है जिनके अंश आये दिन देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है. माता कौशल्या तथा पिता रामकुमार के आदर्शों से प्रेरित होकर रचनात्मक लेखन में पदार्पित हुए डॉ.सौरभ मानते कि भले ही वे कविताएं आदि लिखते रहे है, किंतु साहित्य में दोहा ही उनकी प्रिय विधा रही है। आलेख, निबंध तथा फीचर लेखन उनकी अभिव्यक्ति के अन्य प्रमुख रूप है

करीब डेढ़ दशक पहले हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी ने विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के दो वर्गों में काव्य पाठ तथा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता के प्रदेशभर से चयनित प्रतिनिधियों के फाइनल मुकाबले में राज्य कवि उदयभानु 'हंस' के हाथों आशीर्वाद स्वरूप सांत्वना पुरस्कार से अलंकृत एक छात्र आज भारत के प्रमुख अखबारों में नियमित लेखन से समाज को एक सृजनात्मक दृष्टिकोण देने के लिए तत्पर है।

डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है, एक दोहाकार के रूप में जहां उनकी

डॉ सत्यवान सौरभ एवं प्रियंका सौरभ आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है, एक दोहाकार के रूप में जहां उनकी दोहा सतसई 'तितली है का खामोश' के अलावा हजारों दोहे प्रकाशित हो चुके हैं, वह दैनिक स्तंभकार के रूप में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों संपादकीय पृष्ठों पर पर प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे हैं।

दोहा सतसई 'तितली है का खामोश' के अलावा हजारों दोहे प्रकाशित हो चुके हैं, वह दैनिक स्तंभकार के रूप में राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों संपादकीय पृष्ठों पर पर प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे है। लेखन की रुचि-अभिरुचि से जुड़ी अर्धांगनी प्रियंका के जीवन में आने के बाद उनकी लेखकीय साधना व प्रतिभा निरंतर नई धार मिली है।

आजकल इस सौरभ दिव्य-दंपति की लेखनी का समसामयिकी पर दैनिक लेखन नई पीढ़ी के लिए प्रेरणापुंज है। प्रमुख राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के अलावा इनके स्तंभ अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं में करीब चार हजार वेबपोर्टल न्यूजपेपर्स में प्रतिदिन देश और दुनिया में प्रकाशित हो रहे हैं। इसमें दोनों की चिंतनशीलता, लेखकीय दक्षता तथा नियमितता के प्रति समर्पण व साधना का ही प्रतिफल कहा जाएगा कि सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं पर केंद्रित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बहुआयामी लेखन मौलिक सृजनचुक्ष के साथ हो रहा है।

हरियाणा प्रदेश के लिए भी यह गर्व का विषय है कि एक गांव से प्रदेश, देश व दुनिया को चिंतक व विचारक की दृष्टि से देखा जा रहा है। जहां डॉक्टर सत्यवान एक रिसर्च ऑफिसर हैं, वहीं परास्नातक कर चुकी मेधावी प्रियंका आजकल शोध की तैयारी में हैं। एक ओर जहां यह जोड़ी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी एवं अध्यापन में जुटी है, वहीं ये दोनों अपने नवाचारी प्रकल्प आरके फीचर्स के माध्यम से स्तंभ लेखन में निरंतर नए आयाम रचते जा रहे हैं।

एक सवाल के जवाब में डॉ. सौरभ बताते हैं कि लिखते तो ये बचपन से ही रहे है, किंतु कोरोना काल की कैद ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्तंभ लेखन के लिए प्रेरित किया, जिसमें प्रियंका तथा परिजनों का बहुमुखी योगदान रहा। माता कौशल्या तथा पिता रामकुमार के आदर्शों से प्रेरित होकर रचनात्मक लेखन में पदार्पित हुए डॉ.सौरभ मानते कि भले ही वे कविताएं आदि लिखते रहे है, किंतु साहित्य में दोहा ही उनकी प्रिय विधा रही है। आलेख, निबंध तथा फीचर लेखन उनकी अभिव्यक्ति के अन्य प्रमुख रूप है।

साहित्य एवं स्तंभ लेखन के लिए हरियाणा से आईपीएस मनुमुक्त मानव पुरस्कार,उत्तर प्रदेश की राष्ट्रभाषा रत्न पुरस्कार, साहित्य साधक सम्मान के अलावा हिसार के प्रेरणा पुरस्कार, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की भिवानी शाखा तथा आईपीएस मानव मुक्त मानव पुरस्कार से अलंकृत डॉ सौरभ कम उम्र में परिपक्व लेखन से विशिष्ट पहचान बना चुके है। आकाशवाणी दूरदर्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक चैनल्स पर पैनलिस्ट के तौर पर भी उनकी मौलिकता प्रेरक रही है। पुरस्कारों के नाम अपने संदेश में वे कहते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष मूल्यांकन करते हुए रचनात्मकता से क्षेत्र विशेष में कार्य करें आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

Scanned with CamScanner

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2020 के लिए डॉ सत्यवान सौरभ की पुस्तक का चयन

भारत सारथी

चण्डीगढ़। हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2020 के लिए हिन्दी व हरियाणवी भाषा के श्रेष्ठ पाण्डुलिपि अनुदानों की घोषणा की गई है। मुख्यमंत्री के अतिरिक्त प्रधान सचिव तथा सूचना, जनसम्पर्क एवं भाषा विभाग के महानिदेशक डॉ.अमित अग्रवाल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल, जो हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भी हैं, ने इन पुरस्कारों एवं अनुदानों को स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2020 के लिए प्राप्त पाण्डुलिपियों में से हिन्दी व हरियाणवी भाषा की कुल 20 पाण्डुलिपियों का अनुदान के लिए चयन किया गया है। जिन लेखकों की पाण्डुलिपियों का चयन किया गया है उनमें भिवानी के सिवानी उपमंडल के गाँव बड़वा के युवा कवि डॉ सत्यवान सौरभ की कृति तितली है खामोश (दोहा संग्रह) का श्रेष्ठता के आधार पर चयन किया गया है, इस योजना के तहत पुस्तक के प्रकाशन के उपरांत लेखक को 20,000 रुपये की अनुदान राशि प्रदान की जाती है।

युवा लेखक सत्यवान सौरभ को इस उपलब्धि पर पूर्व चेयरमैन रमेश कुमार सिंहमार, सिवानी से साहित्यकार अनिल पृथ्वीपुत्र, डॉ रामनिवास मानव, भाजपा के मंडल अध्यक्ष लाल सिंह लालू, महेन्दर सिंह लखेरा, नाहरसिंह तंवर,डॉ दलबीर सिंह भाटीवाल, डॉ प्रताप सिंह सिंहमार, डॉ नोकराम बमसवाला, कवि दीपक दीप, मुकेश कुमार, परविंदर तंवर, मनोज हरियाणवी, कुलदीप उब्बा, मास्टर सुभाष, सुरेश नांदवाल सहित असंख्य मित्रों ने शुभकामना दी है.

Scanned with CamScanner